IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बिजनौर जनपद में कृषि भूमि उपयोग का विश्लेषण तथा आर्थिक विकास पर प्रभाव का मूल्यांकन

शोध निदेशिका
रश्मि शर्मा रावल
एसोसिएट प्रोफेसर
आर0एस0एम0पी0जी0 कालेज
धामपुर (बिजनौर)

शोधार्थी
नरेश कुमार
भूगोल विभाग
आर0एस0एम0पी0जी0 कालेज
धामपुर (बिजनौर)

शोध सारांश

भौगोलिक सन्दर्भ में कृषि शब्द एक व्यापक अर्थ वाला शब्द है, जिसके अन्तर्गत मानव की वे समस्त क्रियायें सम्मिलित होती हैं, जिनके माध्यम से मानव खाद्य पदार्थों से लेकर कच्चे माल की प्राप्ति हेतु भूमि का उपयोग किया जाता है। कृषि भूमि के अन्तर्गत भूमि की जुताई से लेकर कृत्रिम साधनों के द्वारा सिंचाई उर्वरकों का उपयोग हानिकारक बीमारियों एवं कीटों से फसलों की सुरक्षा के लिये कीटनाशकों का उपयोग मिट्टी का संरक्षण तथा फसली पौधों की निराई–गुड़ाई जैसी क्रियायें हैं। मानव जीवन के स्थायित्व के साथ ही कृषि का उद्भव एवं विकास का प्रारम्भ हुआ और कृषि मानव जीवन के विकास के लिये कृषि भूमि मानव के आर्थिक क्रिया एवं अर्थतन्त्र की आधारशिला रही है। कृषि आर्थिक विकास की धुरी है यह किसी न किसी प्रकार से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति भूमि से होती है। भूमि न केवल आर्थिक विकास की अपितु सामाजिक विकास भी सुनिश्चित होता है। शोधार्थी अपने अध्ययन क्षेत्र बिजनौर जनपद में भूमि उपयोग का विश्लेषण तथा आर्थिक विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन के द्वारा भूमि उपयोग का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। प्रकृति ने किसी क्षेत्र में मानव विकास की विविध सम्भावनाओं हेतु मिट्टी जलवायु को मौलिक रूप से प्रदान किया है, बल्कि मिट्टी जल का वनस्पति हेतु आधार प्रस्तुत करती भूमि एक प्राकृतिक संसाधन है। भूमि उपयोग मूलतः भूमि शोषण प्रक्रिया है जिसमें भूमि उपयोग का व्यावहारिक उद्देश्य मानव की योग्यता दक्षता तथा आवश्यकता के अनुरूप भूमि के उपयोग का बदलता हुआ स्वरूप आर्थिक विकास के प्रभावों की समीक्षा अध्ययन क्षेत्र रामगंगा नदी के मैदानी भागों में स्थित है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन क्षेत्र जनपद बिजनौर है। जो उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद मण्डल का उत्तरी भाग है। अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति 29^0 1′ उत्तरी अक्षांश से 290 47′ उत्तरी अक्षांश तथा 700 पूर्वी देशांतर से 780 57′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। गंगा नदी इसकी पश्चिमी सीमा निर्धारित करती है। जनपद की उत्तरी सीमा हिमालय के शिवालिक श्रेणियों की समीपता है। बिजनौर जनपद की उत्तरी पूर्वी सीमा उत्तराखण्ड राज्य के हरिद्वार जनपद गढ़वाल, नैनीताल जनपद से लगी हुई है। जनपद के पूर्व उधम सिंह नगर, दक्षिण में मुरादाबाद, पश्चिम में मेरठ एवं मुज्जफरनगर जनपद स्थित है। जनपद बिजनौर का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4561 वर्ग किमी0 है जो कि उ0 प्र0 के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 1.91 प्रतिशत है। बिजनौर जनपद के कुल क्षेत्रफल का

96.52 प्रतिशत (4402.52) वर्ग किमी0 ग्रामीण क्षेत्र तथा मात्र 3.48 प्रतिशत (158.48) वर्ग किमी0 नगरीय क्षेत्र के अन्तर्गत है । जनपद की समुद्र तल से औसत ऊॅचाई 232 मीटर तथा सामान्य ढाल उत्तर से दक्षिण की ओर है। बिजनौर जनपद का प्रशासनिक रूप में पांच तहसीलों , 11 विकासखण्डों , 130 न्याय पंचायतों , 959 ग्राम पंचायतें, 2152 आबाद ग्राम, 897 गैर आबाद ग्राम, 6 बन ग्राम, 20 नगर एवं नगर समूह , 12 नगर पालिका परिषद एवं 6 नगर पंचायतें है। यहॉ की कुल जनसंख्या 3682713 (2011 के अनुसार) है, जिसमें कुल ग्रामीण जनसंख्या 27570401 व्यक्ति हैं। जिसमें पुरूष 1438412 (52.16) प्रतिशत तथा महिलायें 1318989 (45.16) प्रतिशत हैं। यहॉ की जनघनत्व 807 किमी0 है। लिंगानुपात 923:1000 तथा साक्षरता 68.56 प्रतिशत हैं। अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण जनसंख्या अधिक होने के कारण भूमि उपयोग पर मानव की आर्थिक क्रियाओं के द्वारा कृषि भूमि पर अधिक दबाव पड़ रहा है। जिससे कृषि का नियोजित ढंग से उपयोग करके भूमि की गुणवत्ता कायम रखना होगा।

बिजनौर जनपद के विकासखण्ड स्तर कृषि भूमि उपयोग का प्रतिरूप हे0–

बिजनौर जनपद में कृषि भूमि उपयोग का प्रतिरूप पृथ्वी के किसी क्षेत्र व मनुष्य द्वारा उपयोग भूमि को सूचित करता है। भूमि के हिस्से पर होने वाले आर्थिक क्रिया कलाप को सूचित करता है उसे वन–भूमि ,कृषि भूमि , परती भूमि , चारागाह भूमि आदि भागों में बाटा जाता है। भारत में पहली बार तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व0 राजीव गांधी द्वारा सन्1988 में एक राष्ट्रीय भूमि उपयोग नीति बनायी गयी । किसी भी क्षेत्र के कृषि भूमि उपयोग के विकास उपर्युक्त एवं अनुपयुक्त के सन्दर्भ में देखा जाता है। उपयुक्त क्षेत्र वह जो अधिकतम उत्पादन देता है तथा आर्थिक विकास का स्तर को ऊॅचा उठता है। अनुपयुक्त क्षेत्र वह है जहॉ बहुत ही कम उत्पादन होता है जिसका आर्थिक विकास का महत्व कम होता है। जनपद बिजनौर में कृषि भूमि उपयोग के अधिकतम उत्पादन और विकास के आर्थिक स्तर के ऑकड़ों का प्रयास किया गया है।

1–भूमि की गुणवत्ता
2–कृषि उत्पादकता एवं दक्षता
3–कृषि भूमि प्रकारों के आधार पर विकास

अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत तीनों आधारों पर प्रयोग करके बिजनौर जनपद के कृषि भूमि उपयोग को पॉच भागों में बॉटा गया है।

1–अति उच्च कृषि विकास के क्षेत्र
2–उच्च कृषि भूमि विकास के क्षेत्र
3–मध्यम कृषि भूमि विकास के क्षेत्र
4–निम्न कृषि भूमि विकास के क्षेत्र
5–अति निम्न कृषि भूमि विकास का क्षेत्र

भूमि उपयोगिता जनपद बिजनौर (हे0 में)–

भूमि उपयोगिता को निर्धारित करने वाले भौतिक कारक भू आकृतिक, जलवायु, मृदा के प्रकार तथा मानवीय कारकों में जनसंख्या घनत्व, प्रौद्योगिकी क्षमता, सांस्कृतिक परम्परायें आदि शामिल है। भूमि उपयोग की नीति राष्ट्रीय स्तर 1988 के आधार पर 2013 में राष्ट्रीय स्तर पर भूमि नीति तैयार की गयी जो 6 मॉडलों (जोन) में है।

1–ग्रामीण एवं कृषि , 2– नगरीय उपान्त , 3– नगरीय क्षेत्र, 4–औद्योगिक क्षेत्र,
5–पारिस्थितिकी क्षेत्र, 6–आपदा क्षेत्र,

इस प्रकार बिजनौर जनपद भूमि उपयोग का प्रतिरूप इस प्रकार स्पष्ट है–

1–वन
2–बंजर तथा कृषि अयोग्य भूमि
3–गैर कृषि उपयोग भूमि
4–कृषि योग्य भूमि
5–स्थायी चारागाह
6–वृक्षों एवं झाड़ियों के अन्तर्गत भूमि
7–चालू परती भूमि
8–शुद्ध बोया गया क्षेत्र
9–एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्र

भूमि उपयोगिता जनपद बिजनौर (हे0 में) :–

क्र0 सं0	कुल भूमि उपयोगिता	2014–15	2015–16
1	वन क्षेत्र	54295	54451
2	कृषि बेकार भूमि	2384	2369
3	वर्तमान परती भूमि	7260	3858
4	अन्य परती भूमि	2158	85
5	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	3696	3171
6	खेती अतिरिक्त उच्च उपयोग भूमि	65281	65781
7	स्थायी चारागाह	481	472
8	अन्य वृक्ष एवं झाड़ियां	2050	2030
	कुल भूमि उपयोग	464545	464545

स्रोतः– जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद बिजनौर 2016–17

भूमि उपयोग का बिजनौर जनपद में वर्ष 2014–15 , 2015–16, 2016–17 के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में भूमि उपयोग 2014–15 में कुल भूमि उपयोग 464545 हे0, जबकि विभिन्न कार्यो में भूमि उपयोग का क्षेत्रफल वन क्षेत्र 54295 हे0, 2015–16 में 54451 हे0, 2016–17 में 54451 हे0 है। कृषि बेकार भूमि 2384 हे0, 2015–16 में 2369 हे0, 2016–17 में 2369 हे0 भूमि है। वर्तमान परती भूमि 2014–15 में 7260 हे0, 2015–16 में 3858 हे0, 2016–17 में 3858 हे0, भूमि है। अन्य परती 2014–15 में 2158 हे0, 2015–16 में 85 हे0, 2016–17 में 85 हे0

भूमि है।ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि 2014–15 में 3696 हे0, 2015–16 में 3171 हे0, 2016–17 में 3171 हे0 भूमि है। खेती अतिरिक्त भूमि 65281 हे0 2014–15, 2016–17 में 65781 हे0 चारागाह 2016–17 में 472 हे0 अन्य वृक्ष झाड़ियां 2016–17 में 2030 हे0 भूमि।

बिजनौर जनपद के कृषि भूमि उपयोग विकासखण्डवार 2016–17 हे0 में–

जनपद बिजनौर में विकासखण्डवार 2016–17 के अनुसार भूमि उपयोग का विभिन्न प्रखण्डों में इस प्रकार वर्गीकृत हैं। कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 2016–17 के अनुसार 464545 है जिसमें वन भूमि 3858 हे0 , अन्य परती भूमि 85 हे0, ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि 3171 हे0, कृषि अतिरिक्त उपयोग भूमि 65781 हे0, चारागाह भूमि 472 हे0, उद्यान एवं झाड़ियॉ 2030 हे0 भूमि है। भूमि उपयोग का प्रतिरूप प्रखण्डों में विभिन्न क्षेत्रों में भूमि उपयोग नजीबाबाद प्रखण्ड में वन भूमि 27695 हे0, कृष्य बेकार भूमि 206 हे0, वर्तमान परती भूमि 343 हे0, अन्य परती भूमि 9 हे0, उद्यान एवं झाड़ियां 20 हे0 भूमि है। मोहम्मदपुर देवमल वन भूमि 500 हे0, कृष्य बेकार भूमि 790 हे0 वर्तमान परती 253 हे0, अन्य परती 0 हे0, ऊसर 482 हे0 कृषि के अतिरिक्त भूमि 10902 हे0, चारागाह 29 हे0 उद्यान एवं झाड़ियां 166 हे0 भूमि है।

क्र0 सं0	विकासखण्ड	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	वन	कृष्य बेकार भूमि	वर्तमान परती	अन्य परती	ऊसर एवं अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त उपयोग भूमि	चारागाह	उद्यान झाड़ियां
1	नजीबाबाद	71552	27695	206	343	9	480	6981	33	158
2	किरतपुर	27162	294	83	484	17	240	3634	9	20
3	मोहम्मदपुर देवमल	49086	500	790	253	0	482	10902	29	166
4	हल्दौर खारी झालू	41853	1531	200	332	20	193	5290	50	418
5	कोतवाली	56674	9878	130	230	6	115	8142	100	128
6	अफजलगढ़	54605	12585	480	276	0	1030	9752	26	235
7	नहटौर	22670	0	11	500	26	8	3167	18	200
8	अल्हैपुर	31350	18	13	351	0	146	4250	37	236
9	बूढ़नपुर स्योहारा	25823	682	88	239	0	154	2953	21	160
10	जलीलपुर	37575	1253	190	435	7	88	2922	77	177
11	नूरपुर	33021	15	95	415	0	119	3964	72	111
	ग्रामीण योग	451371	54451	2286	2358	85	3055	61957	61957	2009
	नगरीय योग	13174	0	83	0	0	116	3824	3824	21
	कुल जनपद योग	464545	54451	2369	3858	85	3171	65781	65781	2030

स्रोत :– जिला सांख्यिकी पत्रिका बिजनौर जनपद 2016–17

हल्दौर खारी झालू प्रखण्ड में वन भूमि 1531 हे0, कृष्य बेकार भूमि 200 हे0 वर्तमान परती भूमि 332 हे0, अन्य परती 20 हे0, ऊसर भूमि 193 हे0, कृषि अतिरिक्त भूमि 5290 हे0, चारागाह भूमि 50 हे0, उद्यान एवं झाड़ियां 418 हे0, भूमि है। कोतवाली प्रखण्ड में भूमि उपयोग का वितरण वन भूमि 9878 हे0, कृष्य बेकार भूमि 130 हे0, वर्तमान परती भूमि 230 हे0, अन्य परती 6 हे0, ऊसर भूमि 115 हे0, कृषि अतिरिक्त उपयोग भूमि 8142 हे0, चारागाह भूमि 100 हे0, उद्यान एवं झाड़ियां 128 हे0 भूमि है। अफजलगढ़ प्रखण्ड में 12585 हे0 कृष्य बेकार भूमि 480 हे0, वर्तमान परती भूमि 276 हे0, अन्य परती 0 हे0, ऊसर भूमि 1030 हे0, कृषि के अतिरिक्त भूमि 9752 हे0 , चारागाह भूमि 26 हे0, उद्यान एवं झाड़ियां 235 हे0, नहतौर प्रखण्ड में वन भूमि 0 हे0, कृष्य बेकार भूमि 11 हे0, वर्तमान परती भूमि 500 हे0, अन्य परती भूमि 26 हे0, ऊसर भूमि 8 हे0, कृषि अतिरिक्त 3167 हे0, चारागाह भूमि 18 हे0, उद्यान झाड़िया 200 हे0 भूमि है। अल्हैपुर प्रखण्ड में वन भूमि 18 हे0, कृष्य बेकार भूमि 13 हे0, वर्तमान परती 351 हे0, अन्य परती 0 हे0, ऊसर भूमि 146 हे0, कृषि अतिरिक्त भूमि 4250 हे0, चारागाह भूमि 37 हे0, उद्यान भूमि 236 हे0 भूमि है। बूढ़नपुर वन भूमि 682 हे0, कृष्य बेकार 88 हे0, वर्तमान परती 239 हे0, अन्य परती भूमि 0 हे0, ऊसर भूमि 134 हे0 कृष्य अतिरिक्त 2953 हे0, चारागाह 21 हे0, उद्यान भूमि 160 हे0 भूमि है। जलीलपुर प्रखण्ड में वन 1253 हे0 , कृष्य बेकार भूमि 190 हे0, वर्तमान भूमि 435 हे0, अन्य परती 7 हे0, ऊसर भूमि 88 हे0, कृष्य बेकार भूमि 2922 हे0, चारागाह 77 हे0, उद्यान 177 हे0, भूमि है। नूरपुर प्रखण्ड में वन भूमि 15 हे0, कृष्य बेकार भूमि 95 हे0, वर्तमान परती 415 हे0 अन्य परती 0 हे0 , ऊसर भूमि 119 हे, कृषि के अतिरिक्त भूमि 3964 हे0, चारागाह भूमि 72 हे0, उद्यान भूमि 111 हे0 भूमि है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र भूमि उपयोग का वितरण प्रस्तुत है।

जनपद बिजनौर में कृषि भूमि उपयोग का आर्थिक विकास पर प्रभाव :–

अध्ययन क्षेत्र बिजनौर जनपद में कृषि भूमि उपयोग का आर्थिक कारक प्राकृतिक कारकों की ही तरह कृषि विकास को प्रभावित करते है। किसी भी क्षेत्र में कृषि भूमि का प्रारूप वहॉ की कृषि व्यवस्थाओं एवं आर्थिक तन्त्र पर निर्भर करता है। साथ ही साथ कृषकों का आर्थिक विकास भी कृषि उत्पादित वस्तुओं पर ही आश्रित है। इस प्रकार अर्थतन्त्र का प्रभाव कृषि विकास पर स्पष्ट परिलक्षित होता है। परिणामस्वरूप ग्रामीण समाज की कृषि विकास से आर्थिक सम्पन्नता या समृद्धि की प्राप्ति होती है। आर्थिक समृद्ध के फलस्वरूप प्रत्येक कृषक उन्नत शील बीज सिंचाई के साधनों की प्राप्ति उर्बरक कृषि के सम्बन्धित उपकरण आदि के द्वारा कृषि भूमि का विकास आर्थिक दृष्टि से किसी समाज को समृद्ध विकास कर सकता है। जैसे विकसित देशों में कृषि भूमि उपयोग का नियोजित व्यवस्था के द्वारा उन्नतिशील , विकसित सम्पन्न , कृषिक आर्थिक को विकसित करते है तथा विकासशील एवं अल्पविकसित देशों में आर्थिक कारकों के अभाव में कृषि भूमि उपयोग पर उत्तम उत्पादन नहीं कर सकतें है और कृषि भूमि का प्रतिरूप दिन–प्रतिदिन दयनीय स्थिति बढ़ती जाती है। इस प्रकार शोधार्थी द्वारा अपने अध्ययन क्षेत्र बिजनौर जनपद में कृषि भूमि उपयोग का आर्थिक विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन विभिन्न प्रखण्डों में भूमि उपयोग प्रतिरूप के आधार पर भूमि का विभाजन करके हम कृषि भूमि एवं अन्य कार्यों में उपयुक्त भूमि का नियोजन व्यवस्था के द्वारा आर्थिक विकास के द्वारा कृषि भूमि उपयोग के प्रभावों का मूल्यांकन है। कृषि भूमि उपयोग का विश्लेषण भूमि उपयोगिता के आधार पर वन भूमि, कृषि भूमि, परती भूमि , कृष्य अयोग्य भूमि, चारागाह भूमि, वन–झाड़ियॉ, ऊसर भूमि , वर्तमान परती के द्वारा विश्लेषण किया गया है।

कृषि भूमि उपयोग का आर्थिक विकास के बीच सम्बन्ध का मूल्यांकन :–

अध्ययन क्षेत्र में कृषि भूमि उपयोग एवं आर्थिक विकास के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध है, क्योंकि कृषि भूमि का विकास आर्थिक क्रियाओं को आधार प्रस्तुत करती हैं। आर्थिक विकास भूमि उपयोगिता के मूल्य को निर्धारित करती है। अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग का विभिन्न प्रखण्डों में कृषि भूमि एवं आर्थिक विकास के बीच कृषि भूमि का अर्थतन्त्र पर प्रभाव दिखाई पड़ता है। जैसे गंगा एवं रामगंगा नदियों के द्वारा भूमि संरचना उपजाऊपन एवं कृषि उत्पादक भूमि का शिवालिक श्रेणियों के क्षेत्रों में पाये जाने वाली भूमि की उर्वरा शक्ति में

अन्तर पाया जाता हैं। इस प्रकार कृषि भूमि उपयोग का आर्थिक विकास के माध्यम से मूल्य निर्धारण किया जा सकता है। भूमि उपयोग प्रबन्धन की नीति भारत सरकार द्वारा राष्ट्र एवं राज्य के भूमि उपयोग नियोजन के बंजर भूमि की गति प्रदान के लिये पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के अन्तर्गत 1985 में राष्ट्रीय भूमि विकास बोर्ड की स्थापना की तथा 1992 में ग्रामीण भूमि विकास एवं गरीबी उपसमन मंत्रालय में बंजर भूमि को 1999 में भूमि संसाधन विभाग को दिया गया समेकित भूमि विकास आई0डब्लू0डी0पी0 1989–90 में लागू किया गया। 1 अप्रैल 1995 को वाटररोड, ऊसर सुधार कार्यक्रम, मृदा परीक्षण , मृदा फसल संयोजना कार्यक्रम, कृत्रिम जल उपयोग कार्यक्रम के अन्तर्गत सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र बिजनौर जनपद में आर्थिक विकास एवं कृषि भूमि उपयोग के बीच सम्बन्ध दीर्घकालीन योजनाओं के माध्यम से विकसित किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1–सिंह के0एन0–आर्थिक भूगोल के मूल तत्व –ज्ञानोदय प्रकाश, गोरखपुर।
2–सिंह बी0बी0–कृषि भूगोल –ज्ञानोदय प्रकाश गोरखपुर।
3–भारतीय मृदा परीक्षण संस्थान जोधपुर।
4–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली।
5–जिला सांख्यिकीय पत्रिका बिजनौर जनपद – 2016–17।
6–जिला मृदा परीक्षण संस्थान बिजनौर – 2015–16।
7–सिंह एवं दूबे–प्रादेशिक विकास नियोजन–ताराबुक एजेन्सीज वाराणसी।
8–तिवारी आर0सी0 एवं सिंह बी0 एन0 :कृषि भूगोल , प्रयाग पुस्तक भवन,इलाहाबाद 2000 , पृष्ठ–2।
9–सिंह जगदीश, सिंह कामेश्वर नाथ एवं पटेल रामवरन : भारत एवं समीपवर्ती देश, ज्ञानोदय प्रकाशन, दाऊदपुर, गोरखपुर, 1999 पृष्ठ–107।
10–मेहता बी0शर्मा एवं सैनी एन0 पी0 : कृषि अर्थशास्त्र, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, 1986 पृष्ठ–24।
11–रहमान ए0 :भारत में विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी, भागीरथी सेवा संस्थान, राजनगर, गाजियाबाद, 1986 पृष्ठ–26।
12–मिश्रा विनीत : कृषि अर्थशास्त्र, भारत भारती प्रकाशन एण्ड कम्पनी , मेरठ, 1996–97 पृष्ठ 486।
13–वेद प्रकाश अरोड़ा : कृषि का ऊॅचा उठता ग्राम योजना मासिक अंक जनवरी 2011 पृष्ठ – 41।
14–अमरेन्द्र कुमार राय : 'किसानों का बजट' योजना मासिक पत्रिका मार्च 2010 पृष्ठ –21, 22।
15–डिस्ट्रिक्ट गजेटियर आफ बिजनौर,1981।
16–जिला अर्थ एवं संख्या प्रभाग द्वारा प्रकाशित विकास पुस्तिका जनपद बिजनौर।
17–जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद बिजनौर।
18–प्रवीन योगेश : ताजदारे अवध भारत बुक सेंन्टर द्वितीय संस्करण पृष्ठ –5।
19–फ्रेरहर , ए : दि मोनूमेनटल एन्टीक्यूटीज एण्ड इन्सक्रप्सन इन दि नार्थ–वेस्टर्न प्रोविन्स एण्ड अवध, पृष्ठ–227।
20–परमिटर, एफ0ई0 : एन्सेन्ट इण्डिया हिस्टोरिकल ट्रेडिसन पृष्ठ – 34